- तृतीय अध्याय -

'पत्तों की बिरादरी' में पात्र और चरित्र-चित्रण

तृतीय अध्याय

" पत्तों की बिरादरी " में पात्र और चरित्र-चित्रण।

उपन्यास साहित्य में 'कथावस्तु" उपन्यास का प्राण तत्व है, तो "पात्र तथा चरित्र-चित्रण" उपन्यास का प्राणभूत तत्व है। उपन्यास में चरित्र-चित्रण का बड़ा महत्व है। डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्तजी के अनुसार "किसी भी पात्र के व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं - बाह्य और आन्तरिक। बाह्य व्यक्तित्व के अन्तर्गत उसका आकार, रूप, वेशभूषा, आचरण का ढंग, बातचीत आदि आते हैं। और आन्तरिक पक्ष का सम्बन्ध उसकी मानसिक तथा बौध्दिक विशेषताओं से होता है।"[१] सफल चरित्र-चित्रण के लिए मानव-स्वभाव का सामान्य ज्ञान, मनुष्य के अन्तर्मन का परिचय, उसके भावों, विचारों, राग-द्वेषों, अंत:संघर्षों की जानकारी के अतिरिक्त सहानुभूति, कल्पनाशक्ति तथा वर्ग-विशेष की जानकारी अपेक्षित है। आलोचकों ने सुविधा के लिए पात्रों के निम्न-लिखित भेद किए हैं --

३ :१ चरित्र-चित्रण के भेद -

३:१:१ "व्यक्ति प्रधान चरित्र -

वह पात्र जो वर्ग-विशेष के गुण-दोषों का प्रतिनिधित्व न कर अपनी विशिष्ट चारित्रिक विशेषताएँ रखता है।

३:१:२ वर्ग प्रधान चरित्र -

वह पात्र जो अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता हैं।

३:१:३ स्थिर पात्र -

यह पात्र आरंभ से लेकर अन्त तक समान रहते हैं, उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता।

३:१:४ परिवर्तनशील पात्र -

ये पात्र विकसनशील होते हैं, परिस्थिति का छोटा सा आघात भी उनकी जीवन दिशा और विचार पध्दति को बदल देता है।"[२]

"पत्तों की बिरादरी" के पात्र योजना -

उपन्यासकार मणि मधुकरजी ने अपने प्रस्तुत उपन्यास में सफलता के साथ पात्रों का चरित्र-चित्राण किया है। इन्होंने अपने उपन्यास में विविध प्रकार के पात्रों का चयन बड़ी कुशलता से किया है। लेखक अपने भावों-विचारों को पात्रों के माध्यम से विशिष्ट उद्देश्यको सामने रखाकर प्रकट करता है।

"पत्तों की बिरादरी" एक सामाजिक उपन्यास है। भारत-पाकिस्तान के रूप में हिन्दुस्थान का बटवारा हो चुका है। पूरी जनता जातिय दंगे तथा अन्याय-अत्याचार से त्रास्त है। पाकिस्तान ने सन १९६१-६२ के बीच भारत पर आक्रमण कर दिया है। साथ ही में नैसर्गिक आपत्ती के रूप में अकाल पड़ा था। पूरी समाज व्यवस्था टूट चुकी थी।

लोगों को न खाने के लिए रोटी और न पीने के लिए पानी मिल रहा था। लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में दर्दनाक सामाजिक स्थिति का चित्रण किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने राजस्थानी परिवेश में पलीत तथा अकाल से त्रास्त और शोषक वर्ग का प्रतिनिधीत्व करनेवाले पात्रों का चयन किया है। इस उपन्यास में कुल ४० पात्र है। हर एक पात्र अपने-अपने स्थान पर स्थित अपनी-अपनी भूमिका निभाता है। इसमें कुछ प्रमुख तथा कुछ गौण पात्र है।-

३:२ प्रमुख पात्र -

३:२:१ शुबो - (नायक)
३:२:२ इग्यारसीलाल - (खलनायक)
३:२:३ जुगनी - (नायिका)
३:२:४ पुष्पाबाई - (खलनायिका)

३:३ गौण पात्र -

३:३:१ बछराज -
३:३:२ रावता -
३:३:३ हरलो -
३:३:४ बदरू मियाँ -
३:३:५ सुवटी -

इन पात्रों के सिवाय अन्य पात्र हैं -

सिराम, अचली, कवि अजैदान, हद्दी, गज्जी, जमाल खचन्नखाती, जैतपालसिंघा, बाघिया, फुलकी, एम.पी. हीरानंद, जमींदार, गाडीवान, बाऊ, माटी राजा, जानकी काकी, गोदारी, बीनणी आदि पात्र हैं।

३:२ प्रमुख पात्र -

(अ) प्रमुख पुरूष पात्र -

प्रस्तुत उपन्यास के प्रमुख पुरूष-पात्रों में नायक शुबो और खलनायक इग्यारसीलाल का समावेश होता है।

३:२:१ शुबो -

भारत-पाकिस्तान के रूप में हिन्दुस्थान का बँटवारा हो चुका हैं। शुबो पाकिस्तान में स्थित उम्मरकोट के पास फातियाँवाली ढाणी का रहनेवाला है। देश विभाजन के कारण जनता जातिय दंगे तथा अन्याय-अत्याचार से त्रास्त थी। सन १९६१-६२ के समय पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया था। इससे आम जनता को काफी नुकसान पहुँचा। ऐसी स्थिति में अकाल जैसी भयावह नैसर्गिक आपत्ति फैल गयी। लोगों को न खाने के लिए रोटी और न पीने के लिए पानी मिला रहा था। भारत सरकार ने अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए सहायता कैंप लगवायें। जहाँपर दिनभर काम करने पर मजदूरी के रूप में दो वक्त का खाना मिलता था। शुबो भी अपने माँ-बाप को लेकर कैंप की ओर प्रस्तान करता है।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक शुबो अकाल-पीड़ित, शोषित जनता का प्रतिनिधीत्व करता है। उसका व्यक्तित्व आवेश, सहृदय, प्रेरणादायी, मेहनती आदि विशेताओं से युक्त है। शुबो परिस्थितीनुरूप अपने में परिवर्तन लाता है। अत: वह परिवर्तनशील पात्रा है। उसकी चरित्रागत विशेषाताएँ निम्न लिखित है -

३:२:१:१ अकाल-पीड़ित -

भूख से बेहाल शुबो के लिए भारत - पाक बँटवारा कोई माने नहीं रखाता। भारत - पाकिस्तान के रूप में हिन्दुस्थान का बॉटवारा हो चुका था। इस स्थिति में राजस्थान के रेतमय प्रदेश पर भीषाण अकाल फैल चुका था। शुबो भी इस अकाल से त्रास्त है। भारत सरकार ने अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए कैंप खोल दिये हैं। जहाँ पर काम के बदले में दो वक्त का खाना मिलता था। भूखा से त्रास्त शुबो अपने माँ-बाप को लेकर कैंप में आ रहा था। लेकिन भूखा और प्यास के कारण उसके माता-पिता की मौत हो जाती हैं। अकाल से पीड़ित शुबो अपनी माँ की अन्तीम इच्छा तक पूरी नहीं कर सकता। शुबो की माँ अपने बेटे से कहती है - "मरने से पहले ..... बस, एक बार ताजा सिंकी हुई रोटी का सुवाद चख लेना चाहती हूँ - यही..... यही एक आखारी इंच्छया रह गयी है अब तो!"[3] लेकिन शुबो अपनी माँ को ताजी रोटी तो क्या लेकिन एक घूँट पानी तक नहीं पिला सका। वह अकेला कैंप में भारती के लिए आ जाता है। कैंपवाले उसे कैंप में भारती करने से इन्कार करते हैं, फिर भी शुबो वहीं डटकर खाड़ा रहता है। आखिार पेट की आग बड़ी खातरनाक होती है। पुष्पाबाई तथा बछराज उसे फटकारते है, मगर विवश शुबो वहीं खाड़ा रहता है। बाद में शुबो और बछराज के बीच हुए वार्तालाप

12819
A

से बछराज को शुबो पर दया आती है और वह उसे कैंम्प में भारती कर लेता है।

३:२:१:२ आवेशापूर्ण - व्यक्तित्व -

कैंप में आश्रीत आम लोग पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल के आतंक से त्रास्त हैं। मगर शुबो उनसे आतंकित नहीं है। कैंप के लोग चुपचाप जिन्दा मुर्दों के समान उनके अन्याय-अत्याचार को सहते रहते हैं। लेकिन शुबो को अन्याय-अत्याचार सहना पसन्द नहीं है। उसका व्यक्तित्व आवेशापूर्ण होने के कारण पुष्पाबाई तथा इग्यारसीलाल की कोई बात उसे खाटकती है तो वह उत्तेजित होकर मुँहतोड जवाब देता है। इग्यारसी-लाल एक घटिया किस्म का आदमी है। वह सुवटी के जरिए जुगनी को अपने पास शैय्यासाथी करने के लिए बुलाता है। जुगनी की बेइज्जती शुबो बर्दाश्त नहीं कर पाता। तब वह आवेश में आकर सुवटी से कहता है - "जुगनी नहीं जायेगी। बोल देना इग्यारसीलाल से, अपने पर लगाम लगाकर रहे, नहीं तो किसी दिन यहीं पसलियाँ बिखार जायेंगी उसकी!"[४]

शुबो को भारत -पाक का बँटवारा अमान्य है। वह आवेशित होकर पुष्पाबाई से कहता है - "फालतू का लफड़ा खड़ा मत करो, पुसपा बाई! किसी माँ के यार ने पखोस्तान बना दिया, किसी ने ईंदस्तान सिरफिरे स्साले। उनके बनाने से होता क्या है ? मुझे तो उन्होंने नहीं बनाया ? तुम्हें भी नहीं। तो, हमें मुलुकों में बाँटकर अलग करनेवाले वो घासियारे ..... कोन होते है।"[५]

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में शुबो को जोशिले नवयुवक के रूप में चित्रित किया है।

३:२:१:३ प्रेरणादायी -

कैंप के लोगों में पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल के किए गये अन्याय एवं अत्याचारों का विरोध करने का साहस किसी में भी नहीं है। वे उनके आतंक से आक्रान्त हैं। लेकिन शुबो अपनी साहसी वृत्ति के कारण उनसे डरता नहीं, वह हर स्थिति में संकट का सामना करता रहता है। हरलो शुबो को पकड़ ले जाता है, मगर जब सीमा सुरक्षा दल की पुलीस हरलो को कैद करके ले जाती है तो शुबो बड़ी चालाकी के साथ वहाँ से निकल पड़ता है। कैंप में आनेपर वह देखाता है कि सिराम, गज्जी, फुलकी को कैंप से बाहर निकाल दिया हैं। वह उन्हें अन्दर ले जाना चाहता है, मगर उनके मन मन में डर पैदा हुआ है कि पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल उन्हें कैंप में आने नहीं देंगे। लेकिन शुबो गज्जी की पीठ पर हाथ रखाकर कहता है - "चल, चल। ज्यादा सोच में मत पड़।"[६] तब गज्जी उससे प्रेरणा पाकर गरूड बन जाता है।

शुबो का शरीर तो माटी हो गया मगर उसकी आत्मा अमर है। जुगनी अंत में कहती है - "लेकिन ..... शुबो यह तुम्हारा अन्त नहीं, यह तो शुरूआत है।"[७]

शुबो आधुनिक पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी चरित्र साबित होता है।

३:२:१:४ हक्क जतानेवाला -

भारत सरकार ने अकाल-पीड़ित लोगों की सहायता के लिए कैंप लगवाये थें। उसमें बहुत सारा अनाज लोगों के लिए आता था।

अनाज करीब-करीब २०० लोगों का भोज दिया जाता था, मगर असल में कैंप में पचास-साठ ही लोग मौजुद थें। बचा हुआ अनाज पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल उम्मरकोट की डाकुआ की टोली को बेचकर रक्कम ऐंठ लेते थें। इन पैसों से वे अपनी ऐंयाशी को पूरा करते थें। एक दिन ऐसे ही उम्मर-कोटवालों को अनाज बेच दिया जाता है। ऊँटों पर बोरे लदवाकर ऊँट निकल पड़ते हैं। गड़बड़ी में ऊँटों पर लदे बोरों में से दो बोरे नीचे गिर जाते हैं। शुबो उन बोरों को देखाकर द्वंद्वात्मक स्थिति में आ जाता है। पहले उसके मन में खयाल आता है कि पुष्पाबाई को खाबर कर दे, लेकिन दूसरे ही क्षण उसके दिल से अवाज निकलती है ---"नहीं, इन बोरोंपर न पुसपा-बाई का हक है, न उम्मरकोटवालों का। ये बोरे तो कम्फ के लिए भोजे थे सिरकार ने।"[८]

अपने हक के लिए शुबो अविरत कैंप के लोगों को इकट्ठा कर इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई, हरलो के खिलाप अर्थात अन्याय और अत्याचार के विरोध में लड़ता रहता है।

३:२:१:५ <u>भावुक प्रेमी</u> -

आदमी पत्थरदिल क्यों न हो, लेकिन वह अन्दर से कहीं न कहीं भावुक होता ही है। शुबो अपने माँ-बाप को लेकर रोजी-रोटी की तलाश में भारत सरकार ने लगाये हुए अकाल-पीड़ितों की सहायता शिबीर की ओर आ रहा था। रास्ते में ही उसकी माँ भूख के कारण मर जाती है। और सुरक्षितता के आखरी मोड़पर शुबो के पिता अपने प्राण त्याग देते हैं। माँ-बाप के गुजर जाने के गम में शुबो रो पड़ता है।

शुबो को हरलो डाकू पकड़ ले जाता है, मगर वहाँ से छूटकर फिर वह कैंप में आ जाता है, तो गज्जी शुबो के जाने के बाद की सारी घटनाएँ बताता है। - इनमें बछराज की मौत, बाशिया को जरखा द्वारा उठाकर ले जाना तथा कैंप के लोगों पर किए अन्याय-अत्याचार आदि घटनाएँ सम्मिलित है। "शुबो सुन रहा था, और होठ काट रहा था। शुबो सुनते-सुनते बछराज को, बाशिया को यादकर आँखो पोंछ रहा था।"[९]

जुगनी और शुबो एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। जब जुगनी शुबो से कहती हे, "शुबो तुमने मुझे भुला दिया। तो शुबो के मन में भावुकता उमड़ पड़ती है। और वह जुगनी से कहता है - "नहीं जुगनी!" तुम्हे याद करते हुए तो मैं रोज मौत से लड़ा हूँ। मुझे नहीं पता था, तुमसे फिर कभी मोलाकात होगी।"[१०]

कठोर, पत्थर दिल जैसा शुबो भावुक प्रेमी भी था, इसका पता उक्त प्रसंगों द्वारा चलता है।

३:२:१:६ नीडर -

शुबो नीडर है। वह किसी भी संकट से नहीं डरता। किसी भी मुसीबत का वह डटकर मुकाबला करता है। इग्यारसीलाल और पुष्पा-बाई से कैंप के सभी लोग डरते थें। पुष्पाबाई के चाबूक की फटकार इतनी तेज थी कि किसी भी आदमी को अपने पास बुलाने पर आदमी थर्रर्र उठता था। लेकिन शुबो उनसे निराला व्यक्तित्व है। पुष्पाबाई तथा इग्यारसी-लाल से हमेशा जुझाता रहता है। वह उनसे नहीं डरता।

एक समय पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल और शुबो के बीच

वार्तालाप चल रहा था। इग्यारसीलाल पुष्पाबाई के पास शुबो की शिकायत करता है कि यह सुबह-सुबह जोर-जोरों से गाना गा रहा था। इस विवाद में इग्यारसीलाल शुबो से कहता है - "जबान लड़ाते हो! पुलीस को खाबर हो गयी तो मारे जाओगे। तुम उनके (पाकिस्तान के) जासूस हो जासूस।"[११] इस कथन से शुबो बिफर जाता है, और पूरी नीडरता के साथ कहता है - "मैं कुछ भी होऊँ लेकिन तुम पक्के चोर हो। कम्फ से अनाज की चोरी करते हो और उधार भिजवाते हो।"[१२]

उक्त उदाहरण से शुबो की नीडरता परिलक्षित होती है।

३:२:१:६ साहसी -

साहस इन्सान के जीवन का बड़ा महत्वपूर्ण गुण है। साहस के बलबुते पर आदमी किसी भी कार्य का शिखार पार कर सकता है। शुबो भी साहसी है। जब पहली बार हरलो और शुबो की भेंट हो जाती है तब बातों-बातों में हरलो शुबो के साथ पट्टा खोलने की जिद् करता है। शुबो के मना करने पर भी वह नहीं मानता। शुबो महसूस करता है - "यही वह क्षण है - जुल्लम और जबरदस्ती को कुचल देने का क्षण। उसने तेजी से खींप की लचीली बेत जैसी ताड़ियाँ तोड़कर मुठ्ठी में भर ली, रूको तुम्हारे साथ पट्टा खोलना ही होगा।"[१३] कहकर शुबो हरलो से भीड़ जाता है। शुबो हरलो के साथ मुकाबला करता है। देखाते-देखाते वह उसे परास्त कर देता है। हरलो उससे गिडगिड़ाकर माँफी माँगता है। यहाँपर शुबो की साहसी वृत्ति दृष्टव्य है।

बदरू मियाँ शुबो से बताता है - "इग्यारसीलाल से बचके

रहना। वो अपनी बन्दूक साफ कर रहा है। सनकी है, और अव्वल दर्जे का हरामी। जाने क्या कर डाले।"[१४] लेकिन शुबो उससे डरता नहीं। वह इग्यारसीलाल के सामने साहस के साथ चला जाता है।

३:२:१:८ मानवतावादी -

शुबो भारत-पकिस्तान का बँटवारे को मानता नहीं। वह पूर्णत: मानवतावादी है। शुबो को यह भी नहीं मालूम कि कहाँ से भारत का सीमा शुरू होती है, और कहाँ खात्म होती है। वह लोगों को इकट्ठा करने में तत्पर है। जब इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई और शुबो आपस में बातचीत कर रहे थे तो बातों-बातों में पुष्पाबाई कहती है - "तुम उम्मरकोट के हो और उम्मरकोट मुम्हारे मुलक में है।" यह बात शुबो को खाटकती है, तब वह आवेश में आकर पुष्पाबाई से कहता है - "फालतू का लफड़ा खाड़ा मत करो पुसपाबाई! किसी माँ के यार ने पखोस्तान बना दिया, किसी ने ईंदस्तान। सिरफिरे स्साले। उनके बनाने से होता क्या है ? मुझे तो उन्होंने नहीं बनाया ? तुम्हें भी नहीं। सो हमें मुलकों में बाँटकर अलग करनेवाले वो घासियारे कौन होते हैं ?"[१५]

जब कैंप टूट जाते हैं तब शुबो भारत-पाकिस्तान सरहद्द पर एक ढाणी बसाता है।
और वहाँ उन लोंगो के साथ रहता है। इससे उसकी मानवतावादी वृत्ति दृष्टिगोचर होती है।

३:२:१:९ नास्तिक -

मनुष्य की भगवान पर श्रध्दा होती है। किन्तु जब कठिन

परिस्थिति में भाग्य साथ छोड़ देता है तो इन्सान का भगवान पर से विश्वास उठ जाता है। और वह अपने निजी जीवन में निराशावादी बन जाता है। अकाल-पीड़ित शुबो जब अपने माँ-बाप के साथ रोजी-रोटी की तलाश में भारत में स्थित कैंप की ओर आ रहा था, तो भूख और प्यास के कारण उसके माँ-बाप उसका साथ छोड़ देते हैं। कैंप में आनेपर भी वह अपनी आँखों से अन्याय-अत्याचार को देखता रहता है और उसका भगवान पर से विश्वास ही उठ जाता है। जब बदरू मियाँ शुबो से पूछता है कि 'तुम भगवान को मानते हो; तो शुबो 'नही' कहता है। इससे तात्पर्य यह निकलता है कि शुबो परिस्थिति से उदास होकर नास्तिक हो जाता है।

३:२:१:१० सहृदय -

जब जमाल की पत्नी बीनणी माँ बनने जा रही थी तो सब कैंपवाले घबराये हुए दिखाई देते हैं। शुबो जमाल के मन में हिम्मत बाँधाने का काम करता है। लेकिन खुद बेचैनी से त्रस्त था। "स्त्री की चीख लम्बी-लम्बी कराहटों में बदल गयी थी। शाबो की दीठ उसी के छपरे के आसपास भटक रही थी। गला सूखाकर तड़कने लगा था, पर वह जमाल की गर्दन में हाथा डाले हुए था और इस तरह अपनी बेचैनी को छुपाने का प्रयास कर रहा था।"[१६]

जब जुगनी और अचली कैंप में भरती हो जाती है, तब शुबो उनके साथा सहृदयता से पेश आता है। उनके लिए खाना लाकर देता है। उपर्युक्त प्रसंगों में शुबो की सहृदयता दिखाई देती है।

३:२:१:११ मेहनती -

शुबो के रोम - रोम में मेहनत व्याप्त है। वह मेहनती

है। जब इग्यारसीलाल और पुष्पाबाई उम्मरकोटवालों को अनाज बेचते हैं। उसी समय गड़बडी में ऊँटो पर लेद बोरों में से दो बोरें जमीन पर गिर जाते है। ऊँटो के चले जाने पर शुबो बड़ी मेहनत से एक गड्ढा खुदवाता है, और अनाज के बोरों को वहाँ उस गड्ढे में छिपाता है। यहीं बोरें उसे ताकत और हिम्मत दिलाते है।

कैंप बिखार जाने पर लोग रोजी-रोटी की तलाश में अपने-अपने रास्ते पर चल पड़ते हैं। शुबो भी जुगनी के साथ निकल पड़ता है। वह पचास-साठ लोगों को इकट्ठा कर भारत-पाकिस्तान सरहद्द पर बड़ी मेहनत से अपना घर बसाता है। वहाँ पानी की किललत महसूस होती थी। तब शुबो ने ढाण्गीवालों को इकट्ठा कर एक तीन सौ फुट गहरा कुआ खोद डाला। पानी बहुत चविष्ट निकला। वह कोई भी काम हो पूरी मेहनत और इमानदारी तथा लगन से करता है। अत: वह मेहनती है।

एक दिन शुबो कुएँ पर दोपहर के समय पानी भर रहा था कि वहाँपर कुछ फौजी आयें। वे गुस्से में थें। शुबो से बेबात तक़ार करने लगे। शुबो को गुस्सा आ गया और उसने सिपाहियों से कहा - "मगज मत खाओ। जाओ रास्ता नापो अपना। हमारे सामने तो जो कोई ईदस्तान-पखोस्तान का बखान करेगा, स्साले के ढूँग में भूसा भर देंगे।"[१७] सिपाहियों के लिए यह अपमान असहनीय था। तो उनके सरदार ने शुबो को बन्दूक से उड़ा दिया, और लाश को मैदान में फैंक दिया। तीन दिन बाद कुछ लड़कों ने लाश उठायी और जुगनी को सौंप दी। तब जुगनी शुबो के विकृत चेहरे को सहलाती हुई कहती है - "तुम्हारा यहीं अन्त होना था शुबो!" "लेकिन यह तुम्हारा अन्त नही शुरूआत है।"[१८]

शुबो के चरित्र में प्रेरणादायी, नीडर, साहसी, सहृदय

मानवतावादी, मेहनती आदि गुणों के साथ-साथ भावुक, आवेश, नास्तिक जैसे अवगुणों का भी समावेश है। मनुष्य के चरित्र में कोई-न-कोई अवगुण होता ही है। यदि उसके चरित्रा में अवगुण न हो तो वह ईश्वर कहलायेगा। शुबो मनुष्य होने के कारण उसमें गुणों के साथ कुछ अवगुणों का होना यथोष्ट है। अत: उसका चरित्र उक्त गुणों से उभार आया है।

३:२:२ इग्यारसीलाल -

आलोच्य उपन्यास के प्रमुख पात्रों में से इग्यारसीलाल एक है। वह खलनायक है। इग्यारसीलाल शोषाकवर्ग का प्रतिनिधीत्व करता है। इन लोगोंका अपना एक गुट है। इसमें इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई, रावता आदि सम्मिलित है। इग्यारसीलाल अपनी उम्र की काफी सीढ़ियाँ पार कर चुका है, लेकिन उसमें इतनी बुराईयाँ मौजुद है कि गिनना कठिन सा हो जाता है। इग्यारसीलाल का इलायची, लौंग, सुपारी, इत्र आदि खरीदने-बेचने का व्यापार भी है। कैंप में आने से पहले वह औरतों की दलाली करता था। अब वह कैंप में पुष्पाबाई के साथ काम करता है। वह क्रूरता, भ्रष्टाचारिता, निर्दयता, निर्लज्जता, कामांधाता आदि दुर्गुणों से भरा है। इग्यारसीलाल की प्रमुख चारित्रिक विशेषताएँ निम्नांकित है -

३:२:२:१ दलाल -

भारत सरकार ने अकाल-पीड़ित लोगों की सहायता के लिए कैंप लगाए। कैंप में आने से पहले इग्यारसीलाल औरतों की दलाली का धंदा करता था। वह पुष्पाबाई को ग्राहक लाकर देता था। बदरू मियाँ, पुष्पा-बाई का सेवक है। वह इग्यारसीलाल और पुष्पाबाई के काले-कारनामों से परिचित है। एक दिन शुबो और बदरू मियाँ के बीच राजनीति के बारे

में वार्तालाप हो रहा था। बदरू मियाँ शुबो से राजनेता जैतपालसिंह और पुष्पाबाई के सम्बन्ध के बारे में बता देता है। और जब शुबो बदरू मियाँ से इग्यारसीलाल और पुष्पाबाई का नाता पूछता है, तो बदरू कहता है - "एक जमाना था, जब बज्जार से ग्राहक लेके आता था, वह इस जगत रण्डी के लिए। आज बड़ा व्यौपारी बन गया है, महतारी का भाड़वा।"[१९] इससे सिध्द होता है कि इग्यारसीलाल दलाल है।

३:२:२:२ क्रूर व्यक्ति -

इग्यारसीलाल के आतंक से कैंप के लाग त्रस्त हैं। वह उनपर हर वक्त अन्याय-अत्याचार करता रहता है। एक दिन सुबह-सुबह कैंप के लोग शुबो के साथ खुशी से गाना गा रहे थें, उसी समय इग्यारसीलाल वहाँ आ पहुँचता है। इग्यारसीलाल को देखते ही सब लोग घबराहट के मारे वहाँ से चुपचाप निकल पड़ते हैं। इससे उसकी क्रूरता का एवं आतंक का पता चलता है। एक दिन जानकी काकी, शुबो और अचली काम करते समय एक-दूसरे से बातचीत कर रहे थें। तो उसी समय इग्यारसीलाल वहाँ आ जाता है, और शुबो के सर पर डण्डा मार देता है। इतनाही नहीं वह जानकी काकी के कूलहों पर डण्डे से जोरदार मारता है और कहता है कि - "मुटियाकर मस्तानी हो गयी है तू।"[२०] इग्यारसीलाल के नस-नस में क्रूरता भरी हुई है। वह कभी भी किसी के प्रति दया नहीं दिखाता है। किसी की भलाई नहीं चाहता है।

३:२:२:३ भ्रष्टाचारी -

इग्यारसीलाल शोषकवर्ग का प्रतिनिधीत्व करनेवाला पात्र है। सरकार कैंप के लोगों की सहायता के लिए २०० लोगों का अनाज

भेज देती है। कागज पर २०० लोगों की हजेरी होती थी, मगर असल में ५०-६० लोग ही कैंप में मौजूद हैं। अनाज लोगों तक नहीं पहुँचता। इग्यारसीलाल और पुष्पाबाई अनाज का भ्रष्टाचार करते हैं। वे उम्मरकोट-वाले तथा हरलो से अनाज बेचकर रकम ऐंठ लेते हैं। इन पैसों पर वे ऐय्याशी करते है। हर प्रकार के काले धांधो करके पैसा कमाना और ऐय्याशी तथा आतंक का साम्राज्य फैलानेवाला वह भ्रष्टाचारी व्यक्ति है।

३:२:२:४ निर्दयी -

पूरे कैंप में पानी का एक बूँद भी नहीं था। लोग पानी के अभाव में तड़प रहें थें। जब इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई, रावता कैंप से भाग रहे थे तो गाडीवान पानी का टैंक लेकर आता है। कैंप के लोग पानी के बूँद-बूँद के लिए तड़प रहे थें। ऐसी स्थिति में भी इग्यारसीलाल उन्हें पानी नहीं मिलने देता। वह टैंक की टोटी खोल देता है, और पानी रेत में बह जाता है। गाडीवान के मना करने पर इग्यारसीलाल उसे कहता है - "पानी की अब यहाँ जरूरत नहीं। कम्मवालों को पीने के लिए एक घूँट भी न मिले और वे प्यासे तड़फ-तड़पकर मरें, मै तो ..... यही चाहता हूँ।"[२१] उसमें निदर्यता कूट-कूट कर भरी हुई है। वह हर दम लोगों के साथ निर्दयता से पेश आता है।

३:२:२:५ कामांध -

इग्यारसीलाल का चरित्र कामांधता और स्त्री-लंपटता से ही अधिक भरा है। वह कैंप की प्रत्येक स्त्री को विवश बनाकर अपने साथ शारिरीक सम्बन्ध रखाने के लिए मजबूर बनाता है। सुवटी, अचली पुनकी आदि स्त्रियों के साथ उसके नाजायज सम्बन्ध दिखाई देते हैं। वह

कामवासना में अपने होश-हवास खो बैठता है। इग्यारसीलाल अपनी जिन्दगी की ढलान पर भी अन्याय, अत्याचार, कामांधता आदि बुराईयों को अपनाता है। वह उम्र में अपनी बेटी के समान युवती जुगनी के साथ सम्बन्ध बनाये रखाना चाहता है। अचली अपनी जिन्दगी दाँव पर लगाकर जुगनी को इग्यारसीलाल के चंगुल से बचाती है।

अचली और जुगनी कैंप में भरती के लिए आती हैं, तो पहले उन्हें कैंप में भरती नहीं किया जाता। इग्यारसीलाल उन्हें देखता है। तब उसकी बुरी नजर जुगनी पर पड़ जाती है। जुगनी अठारह-उन्नीस साल की युवती है। एक जवान युवती को सामने पाकर उन्हें कैंप में भरती किया जाता है। इग्यारसीलाल उनसे कहता है कि "नेम-कायदे से रहना होगा, यहाँ। मेरे कहने में चलोगी तो दोनों की सुख से कट जायेगी।"[२२] यहाँपर इग्यारसीलाल की कामांधता दिखाई पड़ती है।

३:२:२:६ <u>दूरदर्शी और व्यवहारकुशल</u> -

इग्यारसीलाल की हर एक बात शुबो को खटकती है। एक दिन दोनों के बीच झगड़ा हो जाता है। बाद में पुष्पाबाई शुबो पर कैंप की रखावाली का काम सौंपती है, तो इग्यारसीलाल शुबो को खात्म करने की मन ही मन ठान लेता है। हरलो और शुबो के बीच के संघर्ष से जब इग्यारसीलाल महसूस करता है कि शुबो बड़े काम का आदमी है। तब वह शुबो के साथ सुलह करने की दूरदर्शिता दिखाता है। इग्यारसीलाल के साथ सुलह करते समय कहता है - "तुमसे मेरी कोई लाग नहीं।' तुम पुसपाबाई के जँजाल में मत पड़ जाना। मै तुम्हें होश्यार कर देना ठीक समझाता हूँ। अपने मतलब के लिए वो लोगों को गाँठती रहती है, लेकिन बदले में देती कुछ नहीं।"[२३] यहाँपर इग्यारसीलाल की दूरदर्शिता

दिखाई देती है।

इसके साथ-साथ उसकी व्यापार में जो बढ़त है, उसका श्रेय उसकी व्यवहार-कुशलता पर निर्भर है।

३:२:२:७ निर्लज्ज -

एक दिन इग्यारसीलाल बदरू मियाँ द्वारा जुगनी को शय्यासाथी करने के लिए अपने पास बुलाता है। बदरू मियाँ जुगनी के बजाय उसकी माँ अचली से ही कहता है कि तुम्हें इग्यारसीलाल ने बुलाया है।" अचली इग्यारसीलाल के तम्बू में जाती है तब वह देखाती है - इग्यारसीलाल अपने बिस्तर पर करीब-करीब नंगा ही पड़ा था। और वह अपनी जांघो में तेल लगा रहा था। अचली को देखाकर भी उसकी बेशर्मी कम न हुई, वह उसे कहता है - "हिमालय की जड़ी-बूटियों का तेल है यह। इससे मरदानगी का जोर आ जाता है।"[२४] यहाँपर इग्यारसीलाल की निर्लज्जता दृष्टव्य है।

प्रस्तुत उपन्यास की चरमसीमा के छोर पर ऐसा चित्राण मिलता है - कैंप के लोगों से घाबड़ाकर इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई, रावता भागना चाहते हैं। मौका पाते ही तीनों बैलगाडी में बैठ जाते हैं। उनके साथ सुवटी भी जाना चाहती है। मगर रावता गाडी से नीचे उतरकर उसे बन्दूक से भून डालता है। और इग्यारसीलाल के कहनेपर पुष्पाबाई रावतापर गोली चलाती है। प्रतिउत्तर में रावता पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल को गोली से उड़ाता है। इसप्रकार इग्यारसीलाल की मौत से अन्याय-अत्याचार की भी मौत हो जाती है। एक भयंकर, क्रूर, निर्दय, नरपशु का अंत भी उतनी ही क्रूरता के साथ होता है।

(ब) प्रमुख स्त्री पात्र -

प्रस्तुत उपन्यास के प्रमुख स्त्री पात्र इसप्रकार -

३:२:३ जुगनी -

जुगनी प्रस्तुत उपन्यास की नायिका है। वह अपनी माँ अचली के साथ पाकिस्तान से भारत के कैंप में पनाह लेने आती है। जुगनी अपने-आप को अवैध सन्तान समझाती है। मगर वक्त आनेपर उसकी माँ बछराज को उसका पिता बताती है। जुगनी प्रस्तुत उपन्यास की नायिका होते हुए भी उपन्यास में कुछ महत्वपूर्ण घाटनाओं में ही उसकी उपस्थिति दिखाई देती है। जुगनी सुंदर, समझदार, मेहनती, आदर्श प्रेमिका आदि गुणों से युक्त आदर्श भारतीय कृषक नारी है। जुगनी की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं ।

३:२:३:१ सौंदर्यवती -

जुगनी दिखाने में ही सुन्दर नहीं है तो उसकी इस सुन्दरता के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व में भी सुन्दर तथा अच्छे गुणों का अस्तित्व मिलता हैं। शुबो ने बहुत सी लड़कियाँ देखी थी। मगर उसे जुगनी जैसी सुन्दर युवती आज तक नहीं दिखाई दी। शुबो प्रथम भेंट में ही जुगनी के प्रति आकृष्ठ हो जाता है। और मन ही मन सोचता है - "इसकी आँखो कित्ती सुन्दर, कित्ती काली और उजली है। शुबो जुगनी को देखकर एक कोमल विस्मय से भर उठा। कानों पर छितराये हुए पंखाड़ियों-से बाल। माथे पर मैश डालकर गुँथी हुई दो सुथारी पट्टियाँ। उनींदी-सी बरौनियाँ।[३८] उसकी सुन्दरता के कारण इग्यारसीलाल की कामांधा नजर हमेशा गिद्द की तरह मँडराती है। मगर जुगनी आखारी दम तक उसके शिकंजे से बचके रहती है।

३:२:३:२ आदर्श प्रेमिका -

जुगनी शुबो को सच्चे दिल से चाहती है। वे दोनों एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। उपन्यास में चित्रित घिनौने व्यापार के बावजूद भी जुगनी अपने-आप को इग्यारसीलाल की वासना से अन्तीम क्षण तक बचा लेती है। वह समझदार है। अत: अपने प्रेमी शुबो को जिन्दगी के बारे में कहती है - "जंग लोहे को खा जाता है, अभाव आदमी को। फिर भी जो दु:ख झेलता है, जिन्दगी उसी को कुछ देती है।"[२६]

जब हरलो डाकू शुबो को पकड़ ले जाता है तो शुबो और जुगनी एक-दूसरे की आस लगाएँ रहते हैं। शुबो हरलो के चंगुल से निकल आने पर जुगनी उसे कहती है - "मैंने आस नहीं छोडी थी। ..... और तुम हारे नहीं। बिलकुल थके नहीं। तुम जुलम सहके और ज्यादा पुख्ता हो गये। मैं बहोत खुश हूँ, शुबो।"[२७] इससे जुगनी का शुबो के प्रति अनुराग प्रतीत होता है। वह एक आदर्श प्रेमिका साबित होती है।

३:२:३:३ प्रेरणादायी -

समाज में एक बात प्रचलित है - सफल पुरुष के पीछे किसी औरत का हाथ होता है। जुगनी शुबो को सच्चे दिल से प्यार करती है। हमेशा उसके कार्य में प्रेरणा देती है। शुबो का व्यक्तित्व आवेशपूर्ण है। वह हमेशा बेसब्री से काम लेता है। उसे हमेशा लगता है कि किसी से टक्कर ली जाय, मुकाबला किया जाय, और जो दहशत की अदृश्य दीवार है, उसे तोड़ दिया जाय। लेकिन प्रतिकूल परिस्थिति में नसीब भी उसका मजाक उड़ाता है। पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल जैसे पूँजी-पतियों का प्रतिनित्व करनेवाले लोग कैंपवाले को सिर्फ चमड़ी का पेट समझाते है। उन्हें मालूम होना

चाहिए कि उनका पेट भूखा भी है। शुबो उनके दुर्व्यवहार से आवेश में आता है। लेकिन जुगनी उसे चारण अजैदान कवि की उक्ति सुनाती है - " पेट के अलावा और भी बहुत कुछ है हमारे पास। घाड़, बाजू, दिमाग, पाँव और इन सबको जोड़नेवाली ताकत।"[२८] इससे शुबो प्रेरणा पाता है। अत: जुगनी शुबो के लिए हमेशा प्रेरणा देती है।

३:२:३:४ समझादार -

जुगनी काफी समझादार है। उसे इस समाज के कारिन्दों की वजह से समझादार होना पड़ा है। शुबो और जुगनी एक-दूसरे से बहूत प्यार करते हैं। जुगनी की किसी के द्वारा बेइज्जती शुबो बर्दाश्त नहीं करता। जब इग्यारसीलाल ने जुगनी को अपने पास शैय्या साथी करने के लिए बुलाया तो शुबो यह सुनकर तुरन्त आवेश में आ जाता है। तब जुगनी उसे समझाती हुअी कहती है - " मैंने तुम्हारी तरह दुनिया का सामना नहीं किया है , शुबो। लेकिन जानती हूँ कि जिन्दा रहने के लिए जिन्दगी को किस तरह रौंदना पड़ता है। इग्यारसीलाल अकेला नहीं है, उस जैसों की पलटन बहुत-बहुत खूँखार। रीस-रीस करके तो हम अपने को ही नष्ट करेंगे। असल में जरूरत है समझादार होने की और फिर राग छेड़ने की।"[२९] जुगनी हर समय समझादारी से काम लेती है। इस प्रकार वह समझादार औरत के रूप में प्रस्तुत हुअी है।

३:२:३:५ घिनौने काम के प्रति नफरत -

अचली जुगनी की माँ है। उसे परिस्थिति से मजबूर होकर कई पराये मर्दों की हवस का शिकार होना पड़ा। और कुछ दिनों बाद यही उसकी आदत सी बन गई। उसके दीने, इग्यारसीलाल, सिपाही आदि

पर पुरुषों के साथ सम्बन्ध दिखाई देते हैं। जब से जुगनी ने होश सँभाला है, तब से उसने अपनी माँ को वेश्या के रूप में ही देखा था। जुगनी को अचली का बर्ताव पसंद नहीं था। उसके मन में अचली के घिनौने काम के प्रति नफरत पैदा होती है। एक दिन बछराज की मृत्यु होने पर अचली रो रही थी। जुगनी ने रोने का कारण पूछने पर अचली बछराज जुगनी का पिता होने का दावा करती है। तब जुगनी कहती है - "जब से होश सँभाला है, जने-जने के लिए तुमसे यहीं सुनती आयी हूँ - यह तेरा बाप है, वह तेरा बाप है, इसको बापू मान, उसको बापू बोल। गिनना ही भूल गयी मैं तो, जाने कित्ते बाप हो गये मेरे।"[30] जुगनी के मन में घिनौने बर्ताव के प्रति नफरत थी। बछराज-अचली की असलियत जानने पर पिता के प्यार की प्यासी जुगनी रो पड़ती है।

३:२:३:६ मेहनती -

जुगनी मेहनती है। कैंप में इग्यारसीलाल ने जुगनी के प्रति आसक्ति प्रकट की मगर उसे हर बार ठुकरा कर वह मेहनत करके अपना पेट पालती है। कैंप टूटने पर शुबो और जुगनी भारत-पाकिस्तान सरहद्द पर अपनी झोपड़ी खाड़ी कर देते हैं। वहाँ पानी की किलत महसूस होने लगी तो वे दोनों अपने साथियों को लेकर एक गहरा कुँआ खोदते हैं। इसके लिए उन्हें काफी परिश्रम करना पड़ता है। जब शुबो सिपाहियों के हाथों मारा जाता है। तो जुगनी अपने दु:ख को भूलकर मेहनत करके अपना गुजारा खुद करती है। वह मुहल्ले के खेलते-कूदते बच्चों से लाड़-प्यार से पेश आती है। वह उन्हें तिल खाने देती है , और कहती है - "लो, नये तिल खाओ। ताकत आयेगी।"[31] "ताकत" इस शब्द को वह भली-भाँति जानती है।

इसप्रकार जुगनी मेहनती और ममतामयी औरत के रूप में तकदीर के मारे विवंश किन्तु स्वाभिमान के साथ गुजारा करनेवाली अपने

प्रेमी के लिए प्रेरणा देनेवाली, दूसरों की मदद करनेवाली प्रतिनिधी स्त्री पात्र है।

३:२:४ पुष्पाबाई -

पुष्पाबाई प्रस्तुत उपन्यास में खलनायिका के रूप में उभर आयी है। वह पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधीत्व करती है। पुष्पाबाई कैंप लगाने से पहले वेश्या व्यवसाय करती थी। राजनेता जैतपालसिंघ की रखैल होने के नाते अब वह कैंप की सर्वेसर्वा बन गई है। वह बहुत सारे अवगुणों से युक्त है। वह अत्याचारी, भ्रष्टाचारी, लालची, ऐशोआराम, डरपोक वृत्ति आदि दुर्गुणों से युक्त है। पुष्पाबाई की चारित्रिक विशेषातएँ इसप्रकार -

३:२:४:१ अत्याचारी -

पुष्पाबाई अत्याचारी है। सब लोग उसका अत्याचार सहते रहते हैं। मगर किसी में भी उसके खिलाप आवाज उठाने की हिम्मत नहीं है। एक दिन बदरू मियाँ, जब पानी की बोतल समझकर गलती से पुष्पाबाई की शराब की बोतल उँडेल देता है, तो पुष्पाबाई बदरू मियाँ पर कोड़े बरसाती है। वह पुष्पाबाई की जीजान से सेवा करता है, फिर भी बदरू मियाँ को उसके कोड़ों का शिकार बनना पड़ता है। सब लोगों में पुष्पाबाई का काफी आतंक रहा है। सब उसे डरते हैं। पुष्पाबाई जब शुबो को अपने तम्बू में बुलाती है तब सब लोग बेचैन रहते हैं। शुबो पुष्पाबाई के तम्बू से बाहर आनेपर लोग शुबो से पूछते है - "तुम्हें मारा तो नहीं। उसने ना कहने पर किसी ने कहा - "अपनी पीठ करना इधार। शेखी मत बघारो, पुसपाबाई का कोड़ा किसी को बखासता नहीं।"[३२] इससे तात्पर्य निकलता है कि

पुष्पाबाई कठोर दिलवाली, अत्याचारी औरत है।

३:२:४:२ भ्रष्टाचारी -

कैंप के लोगों के लिए सरकार से अनाज आता था। लोगों को दिन भर काम के बदले में दो वक्त का खाना मिलता था। कैंप में अनाज २०० लोगों का आता था मगर असल में कैंप में ६०-६५ ही लोग उपस्थित थें। बाकी बचा हुआ अनाज पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल उम्मरकोटवालों तथा हरलो को बेचकर बेचकर रक्कम ऐंठ लेते हैं। कैंप के लोगों के नसीब में दो वक्त की रोटी तक नहीं होती मगर ये लोग इस भ्रष्टाचार के पैसों से अपनी ऐशोआराम की चीजें खरीदते हैं। उन्हें खुद की परवा है लोगों की नहीं है।

३:२:४:३ वेश्या -

पुष्पाबाई भारत सरकार ने अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए लगवाये कैंप की मुखियाँ है। कैंप में आने से पहले वह वेश्या व्यवसाय करती थी। अब वह राजनेता एम्पी. जैतपालसिंघ की रखैल है। जैतपाल-सिंघ की कृपा से पुष्पाबाई कैंप की मुखियाँ मुकरर की गयी है। इसप्रकार वह कैंप की सर्वेसर्वा बन जाती है। एक दिन शुबो और बदरू मियाँ में राजनीति को लेकर बातचीत हो रही थी। पुष्पाबाई और जैतपालसिंह तथा इग्यारसीलाल के बारे में बदरू मियाँ बतात है - "एक जमाना था, जब बज्जार से ग्राहक लेके आता था यह, इस जगत रण्डी के लिए। आज बड़ा व्यौपारी बन गया है महतारी का भड़वा।"[33] अत: सिध्द होता है कि पुष्पाबाई प्रारंभ में वेश्या थी और बाद में उसी की बदौलत कैंप की मुखियाँ बनकर शासन चलाती है।

३:२:४:४ लालची -

पुष्पाबाई लालची स्वभाव की औरत है। जब इग्यारसी-लाल और पुष्पाबाई को दूसरे कैंप के कुछ लोगों ने मार-पिट कर खाने की चिजें उठा ली। पुष्पाबाई को होश आते ही अपनी जान के बजाय जान से प्यारा "बक्सा" याद आता है। बदरूमियाँ के कथन के लेखाक ने पुष्पाबाई की लालची वृत्ति पर प्रकाश डाला है। पुष्पाबाई की मौत होने पर बदरू मियाँ उसकी लाश को घूरकर देखाता है। और कहता है - "बरसों से देखाता आ रहा हूँ मैं - तुम्हें। जवान होते, नखारे करते और यारों के साथ दगा करते देखा है मैंने तुम्हें। रण्डी थी तुम्हारी माँ। घटिया, गन्दी, लालची औरत। लेकिन तुम्हें वो चाहती थी। तुमने उसे भी मरवा डाला था गुण्डों से। वह तुमसे कमाई करना चाहती थी। और तुम्हारे खुवाब थे एम्मेले - एम्पी बनने के।"[३४] वह लालच में आकर अपनी माँ का खून तक कराती है। इस प्रकार की लालची और महत्वकांक्षी औरत पुष्पाबाई है।

३:२:४:५ ऐशोआरामी -

प्रस्तुत उपन्यास में लेखाक ने शोषाक तथा शोषित वर्ग का चित्रण किया है। शोषितों को एक तरफ कठोर परिश्रम के बदले में एक बार की बासी रोटी तक नहीं मिलती। लेकिन दूसरी ओर शोषाक-शक्तियों का प्रतिनिधीत्व कर रहें पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल के लिए ऐशोआराम है। पुष्पाबाई के तम्बू में चारों ओर कालिन बिछा हुआ है। बदरूमियाँ के हाथों वह हर दिन ब्राहमी के तेल से अपनी मालिश कराती है। महँगी पावडर लगाती है। उसे पीने के लिए बाड़मेर से मँगाई विस्की लगती है। तो अन्य कैंपवालों को पीने के लिए भरपेट पानी तक नहीं मिलता। वह हमेशा शराब के नशा में तर्रर रहती है।

३:२:४:६ महत्वाकांक्षी -

पुष्पाबाई राजनीति में रूचि रखाती है। वह एम.एल.ए. बनने के खवाब देखाती है। इस कुर्सी को पाने के लिए वह अपनी माँ का खून तक गुण्डों से करवाती है। वह राजनीति में आने के लिए हर तरह के कांड करती रहती है। उसे राजनीति के लोगों से हमेशा लगाव रहता है। वह एम्पी. जैतपालसिंघ के साथ इसी उद्देश्य से सम्बन्ध रखाती है। जब पुष्पाबाई को ज्ञात होता है कि शुबो ने इग्यारसीलाल का मुकाबला किया। और वह किसी का खून तक कर सकता है। तब पुष्पाबाई उसे मिलती है, और कहती है - " बहोत अच्छे। मुझे तो राजनीती में ऐसे ही आदमी की जरूरत थी। तुम बहादुर हो। मेरे साथ रहोगे तो उनत्ती करते ही चले जाओगे। कैंप में .... मरद कोई नहीं, सब चूहे हैं। नाज खाते हैं और मींगणी करते हैं।"[३५] इससे स्पष्ट है कि पुष्पाबाई राजनीति में दिलचस्पी रखाती है। वह एम.एल.ए. बनने के सपने देखानेवाली महत्वाकांक्षी औरत है।

३:२:४:७ डरपोक -

औरत प्रकृति से ही डरपोक होती है। किन्तु पुष्पाबाई की कठोरता, बेहया वृत्ति, लालच, स्वार्थांधता एवं महत्वाकांक्षा को देखाकर लगता नहीं कि वह डरपोक औरत है। वह लोगों को निदर्यता के साथ कोड़ो से पीटती है किन्तु उसपर संकट आनेवर वह डरी हुअी, सहमी हूअी लगती है। इग्यारसीलाल एवं शुबो का बहस झगडे में परिवर्तित होने पर वह डर के मारे "कुछ नहीं, कुछ नहीं" कहने लगती है।

जब हरलो डाकू ने किसी अन्य कैंप को लुटाऔर वहाँपर एक आदमी ने उसे प्रतिकार करने का प्रयास किया तो हरलो ने उसे फूस के ढेर के

साथ जिन्दा जला दिया था। यह खाबर हवा की तरह चारों ओर फैल गयी तब पुष्पाबाई अपने तम्बू में ऐसे उछलने लगी, मानो - " सारे बदन में लाल चींटियाँ चिपट गयी हों और जमीन में हर जगह साँपों के बिल नजर आने लगे हों।"[३६] वह सपने में भी बहुत डरती है।

३:२:४:८ अंधा-विश्वासी -

एक रात पुष्पाबाई नींद में भयानक सपना देखती है, उस सपने को सही मानकर डरती है। वह जोतिष्य पर विश्वास रखाती है। तालाब की खुदाई के सम्बन्ध में रावता एक प्रस्ताव रखाता है कि तालाब की खुदाई के लिए मिनखा की बली चाहिए। तो पुष्पाबाई यह प्रस्ताव मान जाती है। और एक रात वे दोनों बालक बाघिया को तालाब में बली चढ़ाते है। लेखाक ने पुष्पाबाई की अंधाविश्वासी वृत्ति के माध्यम से समाज में चल रही कुप्रथा पर प्रकाश डाला है। और इस प्रथा में परिवर्तन लाने की चाह प्रकट की है।

३:२:४:९ अदूरदर्शी -

उपन्यास के अन्तीम चरम में पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल, रावता बदरू मियाँ कैंप छोड़कर भागना चाहते थें। तब सुवटी भी उनके साथ भाग चलने की इच्छा व्यक्त करती है। रावता का उसपर पहले से ही रोष था। वह गाडी के नीचे उतरकर सुवटी को बन्दूक की बट से मारने लगता है। तब इग्यारसीलाल के कहने पर पुष्पाबाई बिना सोचे समझे रावता पर बन्दूक चलाती है। रावता हरलो की टोली का अव्वल दर्जे का निशानेबाज था। लेकिन आज पुष्पाबाई के हाथों मात खाता है। प्रतिउत्तर में वह भी पुष्पाबाई तथा इग्यारसीलाल को अपनी बन्दूक का शिकार बनाता है।

अदूरदर्शीता के कारण पुष्पाबाई अपनी जान से हाथ धो देती है। और इसप्रकार उनकी मौत से अंधाकार का साम्राज्य नष्ट हो जाता है।

३:३ गौण पात्र -

३:३:१ ठेकेदार बछराज -

बछराज कैंप में आने से पहले उम्मरकोट में स्थित बलोत्तरा तथा फातियाँवाली ढाणी में रह चुका है। वह कैंप में आने से पहले इग्यारसीलाल के साथ काम करता था। वह परिस्थितिनुरूप बदलनेवाला परिवर्तनशील पात्र है। बछराज ही कैंप के सब लोगों का हमदर्द था। बछराज की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नप्रकार से दिखाई देती है -

३:३:१:१ कला - प्रेमी -

बछराज कला तथा कलाकार से प्रेम रखाता है। जब शुबो कैंप में भरती के लिए आता है तो प्रारंभ में उसे भरती नहीं किया जाता। मगर बातों-बातों में बछराज रघचन्न खाती का जिक्र करता है। रघचन्न खाती काट पर नक्काशी करते में माहिर था। बछराज उसकी कला से बहुत प्रसन्न था। रघचन्न के बारें में बछराज शुबो से कहता है - "रघचन्न जैसा कारागीर मैंने दूजा नहीं देखा। ब्या-मुकलावे में ऐसी पलँग-पाटी बनाता था कि आँखो अटक जाती थीं। इस पर, पायों पर कैसे-कैसे फूल-पान काढ़कर सजा देता था। अक्केला जीव था, मस्त और मौजी।"[३७] उपर्युक्त उक्ति से ज्ञात होता है कि वह कला तथा कलाकारों का प्रेमी था। इसी कारण वह शुबो को कैंप में भरती करवाता है।

३:३:१:२ हमदर्द -

बछराज दयालु तथा हमदर्द है। वह कैंपवाले लोगों के प्रति हमदर्दी जताते हुए हमेशा समझादारी से काम लेता है। संकट के समय उनकी मदद करता है। समाज में रहकर वह व्यवहार-कुशल बन चुका है। जब शुबो और इग्यारसीलाल के बीच झागड़ा हो जाता है, तब कैंप के कुछ लोग शुबो को पिटते है। शुबो चुपचाप वहाँ से निकल पड़ता है। बाद में बछराज शुबो के प्रति हमदर्दी जताते हुए समझाता है कि " तुम्हे सब्र रखना चाहिए। कम्प से निकाल दिये गये तो कहाँ जाओगे तुम ? जान के लाले पड़ जायेंगे। मैं..... तुम्हारे गुस्से को समझाता हूँ, लेकीन अभी तो बर्दास करना पड़ेगा। और कोई चारा नहीं।"[३८] इस प्रकार वह कैंपवाले लोगों के प्रति हमेशा हमदर्दी जताता है। उनकी मदद करता है।

३:३:१:३ मजाकी -

बछराज स्वभाव से मजाकी है। वह कैंपवालों के साथ घुल-मिलकर रहता है। जब गोदारी प्रसव होती है , तो खुशी मनाने के लिए वह कैंपवालेां को गुड़ की डलियाँ बाँटता है। वह बड़ो को एक-एक डली देता है। मगर छोटे बच्चों के लिए दो-दो डले देता है। और ऐलान करता है कि - " छोटे बच्चोंको दो-दो डले। और जो अपने बाप को गाली देकर सुनायेगा उसे तीन डले।"[३९] बच्चे हँस पड़े और तुरंत उनके ओठों पर अपने पिताओं के नाम आने लगे। इससे उसका मजाकी स्वभाव प्रकट होता है।

३:३:१:४ औरतों के प्रति नफरत की भावना -

बछराज अपनी जिन्दगी की शुरुवात में खुश था। उसकी हँसी-खुशी की जिन्दगी में उसका ब्याह उचली से हो जाता है। अचली

सुंदर है। दोनों की घर-गृहस्थी हँसी-खुशी में चल रही थी। लेकिन अचली पथ से भटक जाती है। वह गर्भवती होनेपर भी बछराज को छोड़ किसी पराये मर्द दीने के साथ भाग जाती है। बछराज का दिल टूट जाता है। तब से वह औरत जात से घृणा करने लगता है। उसके मन में बदले की भावना उभर आती है। तब से वह इग्यारसीलाल से मिलकर औरते बेचने का धान्दा करने लगता है। फिर इस गन्दगी भरे धान्धो से उबकर वह कैंप में आकर बस जाता है। कैंप में फिर उसकी अचली से भेंट हो जाती है। वह उसपर बहुत गुस्सा करता है। अचली उसे पूछती है - "तुम औरतों को इस उस पार बेचने - खारीदने का धान्धा करने लगे हो।"[४०] तब बछराज उसे कहता है - "हाँ, बदले की भावना तीखी हो उठी थी। कई दिनों तक यही धान्धा किया, लेकिन मन बिलकुल अकेला और अनाथ होता गया। एक दिन खुद को धिक्कारते हुए सब तज दिया।"[४१] इसप्रकार औरतों के प्रति उसकी नफरत की भावना दिखाई देती है।

३:३:१:५ मिलनसार -

बछराज ने कैंप में आते ही औरतों के प्रति बदले की भावना को त्याग दिया। अब वह कैंपवालों के साथ मिल-जुलकर रहता है। कैंपवालों की कमियों की पूर्ति करने का कार्य वह करता रहता है। बछराज की बीमारी के समय सब कैंपवाले उसकी मन से पूछ-ताछ करते हैं। अचली तो मृत्युशय्यापर पड़े बछराज की बहुत सेवा करती है। बछराज की मृत्यू होने पर सब कैपवाले धाँय-धाँय रो पड़ते हैं। इसप्रकार बछराज अच्छाई और बुराईयों से बना दु:खियों का हमदर्द साथी था। उनका अपना था।

३:३:२ रावता -

रावता के चरित्र में निम्नलिखीत चारित्रिक विशेषताएँ

दिखाई देती है -

३:३:२:१ डरावना - व्यक्तित्व -

रावता कैंप में आने से पहले हरलो डाकू की टोली का सदस्य था। वह बन्दूक चलाने में माहिर था। बछराज की मृत्यू होनेपर पुष्पाबाई ने उसे कैंप में बुलाया और तालाब की स्कीम का ठेकेदार बनाया। उसका व्यक्तित्व डरावना था। लेखाक रावता के व्यक्तित्व के बारे में लिखाते है-" भुजंग-सी देह और चेचक के दानों से भरे चेहरेवाला एक सिर - मुंडा आदमी उसमें आकर रहने लग गया था। नाम था रावता। उसे कभी किसी ने हँसते-मुस्कराते हुए नहीं देखा था। हरदम ऊमड़ा-सूमड़ा सा वह कम्फ में डोलता रहता था। और पाँवों को इस तरह पीटता था, मानो उन पर चींचडे चढ़ गये हो।"[४२] कैंप के लोग उसे देखाते ही डर जाते थे।

३:३:२:२ हत्यारा -

रावता हरलो डाकू की टोली का सदस्य है। उसने कैंप लूँटना, डाका डालना, खून करना आदि दुष्कर्म किए है। एक दिन पुष्पा-बाई रावता से पूछती है - " आज तक कितने साल जेल गए हो।" तब रावता बताता है - " डाके में पहले साढ़ेचार बरस फिर दुबारा फँस गया कत्तल में। उस वखात फाँसी की ही सजा होती, लेकिन हरलो ने जुगत बिठायी और जेलवालों को चकमा देकर अन्दर से निकाल लिया मुझे।"[४३]

जब मधुमक्खियों ने रावता को काट लिया था, तब उसकी बीमारी में गोदारी ने बहुत सेवा की। मगर वह उसके एहसान का बदला उसका बेटा बाघिया की हत्या करके चुकाता है। उपन्यास के अन्त में वह

सुवटी, इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई की भी हत्या करता है। इसप्रकार वह जालीम हत्यारा है।

३:३:२:३ अंधाविश्वास से ग्रस्त -

प्रस्तुत उपन्यास के पात्रों में से कुछ पात्र अंधाविश्वास से ग्रस्त है। समाज में स्थित अशिक्षा, सामाजिक कुरीतियाँ आदि की वजह से अंधाविश्वास बढ़ता ही जा रहा है। इससे समाज ऐसे लोगों की इन कुप्रथाओं के शिकार हो गये। उपन्यासकार ने रावता तथा पुष्पाबाई के माध्यम से अंधाविश्वास का चित्रण किया है। जब पुष्पाबाई रात में देखो सपने की बात कर रही थी, तो रावता उसे सगुण कहकर अपनी अंधाश्रध्दा प्रकट करता हुआ कहता है। - "तलाब की खुदाई करने से पहले आदमी की बलि देने का कायदा है। जोहड़ की मिट्टी को मिनखा का खून न मिले तो वह बदला लेती है , नुकसान पहूँचाती है।"[४४] इसप्रकार रावता की अंधाविश्वासी वृत्ति का परिचय मिलता है।

३:३:२:४ निशानेबाज -

रावता अव्वल दर्जे का निशानेबाज था। वह सामने रखे हुये लक्ष्य को पूरे विश्वास के साथ बेंधानेवाला निशानेबाज होने के कारण उसका हरलो डाकू की टोली में महत्वपूर्ण स्थान था। उसका निशाना कभी नहीं चूकता था। जब पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल, बदरू मिर्ण कैंप छोड़कर भाग रहे थें तब इग्यारसीलाल के कहने पर पुष्पाबाई रावता पर गोली चलाती है। रावता जिंदगी में पहली बार पुष्पाबाई से मात खाता है। लेकिन वह अन्तीम साँस लेने से पहले उनकी दिशा में बन्दूक चलाकर इग्यारसीलाल तथा पुष्पाबाई का अन्त कर देता है।

३:३:३ हरलो -

हरलो एक डाकू था। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नप्रकार

३:३:३:१ निर्दय -

हरलो तथा उसके साथी कैंप पर डाके डालकर अनाज लुटते थें। उन दिनों पानी की किल्लत महसूस हो रही थी। लोग रोटी के अभाव में मर रहे थे। ऐसी भयानक परिस्थिति में हरलो द्वारा कैंप लूटाने की वार्ता चारों ओर हवा की भाँति फैल गयी। उसके निदर्यता का उदाहरण दृष्टव्य है - " जब एक आदमी ने उससे सामना करने की कोशिश की थी तो उसे फूस के ढेर पर डालकर जिन्दा जला दिया गया।"[४५]

हरलो शुबो को पकड़ ले जाता है, और उसे बेरहमी से सुली दे दगवाता है। इससे ज्ञात होता है कि वह जालिम, लुटेरा तथा निर्दय आदमी है।

३:३:३:२ अक्कड -

हरलो अपनी टोली का सरदार है। उसे सरदार होने का तथा अपनी ताकत का घमंड है। एक दिन हरलो शुबो से लड़ना चाहता है। शुबो के लाख मना करने के बावजूद भी वह नहीं सुनता। तब शुबो उससे भीड़ जाता है। अखेर हरलो की शुबो से हार होती है। वह उसके सामने गिड़गिड़ाता है। उसके अक्कड़पण को शुबो चकनाचूर कर देता है। उसकी अक्कड़ता को तोड़ देता है। अत: दृष्टयव्य है कि हरलो अक्कड़ था।

३:३:३:३ बदले की भावना -

हरलो एक दिन शुबो के हाथो मात खाता है। और

तब से उसके मन में बदले की भावना पनपती रहती है। एक दिन मौका पाकर हरलो शुबो को पकड़ ले जाता है। शुबो को सुली से दगवाकर तथा उसपर अनेक अन्याय-अत्याचार करके अपना बदला चुका लेता है। इग्यारसी-लाल तथा पुष्पाबाई ने भी कैंप से अनाज उम्मरकोटवालों को बेचकर हरलो के साथ दगा किया था। तब हरलो पुलिस-अधिकारी को कैंप में भोजकर उनसे बदला लेता है।

एक दिन सीमा सुरक्षा दल की पुलिस हरलो तथा उसके साथियों को पकड़कर ले जाती है। कैंपवालों का कहना है कि " एक बार बी.एस.एफ. की पुलिस के हाथ में, आया हुआ आदमी कभी जिन्दा वापस नहीं आता।" हरलो का अंत भी शायद उसी प्रकार हो गया था।

३:३:४ बदरू मियाँ -

बदरू मियाँ पुष्पाबाई का नौकर है। वह हमेशा पुष्पाबाई की सेवा में लगा रहता है। अन्यायी, अत्याचारियों की संगति में रहकर भी वह कैंपवालो की सहायता करता रहता है। कैंपवाले भी उसे चाहते हैं। उसे अपना मानते हैं।

बदरू मियाँ साहसी है। वह डरता नहीं। लेकिन अपने साहस तथा नीडरता को वह संयम में परिवर्तित करता है। वह पुष्पाबाई के कोड़ो को भी सहता है। उसकी अपनी मजबूरी है। पुष्पाबाई के कोड़ों को वह संयम के साथ सह लेता है।

बदरू समाज में रहकर शारिरीक दृष्टि से कमजोर क्यों न हो मगर मानसिक दृष्टि से वह काफी प्रौढ बन चुका था। उसे राजनिति की पूरी जानकारी है। वह शुबो से बॅरिस्टर जिन्ना, जैतपालसिंघ आदि

राजनेताओं के बारे में बता देता है। वह जिन्ना से सक्त नाराज है।

बदरू मियाँ के मन में पुष्पाबाई के प्रति बदले की भावना पनपती है। जब कैंप छोड़कर पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल भाग रहे थे तो पुष्पाबाई पर गोली चलायी। तब रावता भी प्रतिउत्तर में इग्यारसी-लाल और पुष्पाबाई पर गोलियाँ बरसाता है। पुष्पाबाई जख्मी हो जाती है तब बदरू को लगता है पुष्पाबाई के जख्मों पर पट्टी बाँधा दे। लेकिन पनप रही बदले की भावना जागृत होते ही बदरू मियाँ कहता है। -
" मैं क्यों कुछ करूँ, तुम्हारे लिए ? .... तुमने तो मुझे जीते-जी ही मुरदा बना डाला था।"[४६]

पुष्पाबाई तथा रावता ने मिलकर बाशिया को मार डाला था। यह बदरू मियाँ को मालूम था। मगर किसी को बताने की हिम्मत नहीं हुई। अपनी ही कायरता पर वह खिज प्रकट करता है। बदरू के चरित्र के जरिए लेखक ने संदेश दिया है कि इसके बाद कोई बदरू पैदा न हो।

३:३:५ सुवटी -

सुवटी मनोविकृत पात्र है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित है -

३:३:५:१ मनोविकृत -

प्रस्तुत उपन्यास का सुवटी एक मनोविकृत पात्र है। भारतीय स्त्री अपनी इज्जत-आबरू के लिए जान तक दे देती है। लेकिन सुवटी इस श्रेणी की औरत नहीं है। वह बिना परिश्रम के आराम का जिन्दगी जीना

चाहती है। और अराम की जिन्दगी के लिए वह अपनी इज्जत की परवाह तक नहीं करती। प्रस्तुत उपन्यास में सुवटी के इग्यारसीलाल, हरलो, रावता आदि पराये मर्द के साथ नाजायज सम्बन्ध दिखायी देते है। उसका दावा है कि ऐसा पुष्पाबाई में क्या है, वह हम पर राज करे। मैं भी पुष्पाबाई जैसी अपनी लज्जा का सौदा करके आराम की जिन्दगी जी सकती हूँ। इससे सुवटी की मनोवृत्ति का पता चलता है। वह विकृत मनोवृत्तिवाली औरत है।

३:३:५:२ जवानी का घमंड -

सुवटी को अपनी जवानी पर घमंड था। लेकिन उसे मालूम नहीं है कि यह जवानी कब तक रहेगी। वह अनेक पुरुषों के साथ अपना शारीर सम्बन्ध रखाती है। जब शुबो इग्यारसीलाल के आतंक के बार में कहता है तो सुवटी गर्व से कहती है। - "अब देखाना वो कैसे लिपर-लिपर करता फिरेगा, मेरी छाया के पीछे-पीछे ..... जो औरत उसके तम्बू में हो आती है, उसकी हैसियत बढ़ जाती है कम्प में।"[४७] जब इग्यारसीलाल और अचली के सम्बन्ध बढ़ जाते है, तो सुवटी का घमंड टूट जाता है।

३:३:५:३ चापलूस -

प्रस्तुत उपन्यास में सुवटी के जरिए लेखाक ने उसकी चापलूसी वृत्ति पर तथा उससे होनेवाले परिणामों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। सुवटी हर वक्त चुगलखोरी करती रहती है। उसकी इस प्रवृत्ति के कारण लोगों को बहुत सारे अन्याय तथा अत्याचार सहने पड़ते हैं। वह कैंप प्रमुखा तथा हरलो के सामने अपनी हैसियत बढ़ाना चाहती है। वह शुबो के बारे में हरलो को बताकर उनमें झागड़ा लगाती है। और उन दोनों में मेल करने का प्रयास भी करती है। वह हरलो के पास रावता की शिकायत

करती है। एक दिन इसी चापलूसी की वजह से ही जानकी काकी और फुलकी से वह पिटी जाती है। कैंप छोड़कर भागते समय रावता उसका खून करके अपना बदला चुकाता है। चापलूसी का अंत आखिर मौत से होता है।

३:३:५:४ निर्दयी -

सुवटी कैंप की ही एक सदस्य है। लेकिन वह कैंपवालों के साथ निर्दयता से पेश आती है। और इसका उसे फल मिलता है। भण्डार की चाबी अब सुवटी के पास है। वह कैंपवालों पर अपना रौब जमाती है। कैंप टूट रहे थे। लोगों के झुण्ड के झुण्ड भूखे-प्यासे धक्के खाते हुए मौत के मुँह में अपनी जिन्दगी जी रहे थे। एक दिन उन लोगों को चोरी-छुपे सिराम रोटियों के टूकडे बाँटता है। सुवटी को ज्ञात होनेपर वह सिराम को धक्के मार-मार कर कैंप से बाहर निकालती है। और निर्दयता से कहती है - " वो तुम्हें अच्छे लगते हैं तो जाओ, उन्हीं के साथ रहो। अगर आगे से कम्प के भीतर पैर रखा तो बोटियाँ नुचवा डालूँगी तुम्हारी, याद रखना।"[४८] सुवटी हमारे सामने निर्दयी और बेहया औरत के रूप में आती है। सुख और ऐशोआराम की जिंदगी जिने की चाह रखनेवाली सुवटी का अंत रावता द्वारा होता है।

उपर्युक्त प्रमुख तथा गौण पात्रों के अलावा कुछ अन्य पात्र भी आए है जो उपन्यास को विकसित करने में तथा प्रमुख पात्रों की विशेषताओं को प्रकट करने का कार्य करते हैं। अन्य पात्रों में निम्नलिखित चरित्रों को रखा जा सकता है -

अचली - पाकिस्तान में स्थित उम्मरकोट का रहनेवाली है। वह रोजी-रोटी की तलाश में भारत में लगाएँ कैंप में अपनी बेटी जुगनी

के आती है। उसकी बछराज के साथ शादी हुई थी। लेकिन कुछ दिनों बाद अपनी गर्भावस्था की स्थिति में ही एक दिन दीने नामक पराये पुरुष के साथ बछराज को छोड़कर भाग जाती है। उसके बाद उसका कई मर्दों के साथ सम्बन्ध दिखाई देता है। खुद एक वेश्या लायक औरत अपनी बेटी की इज्जत पर किसी प्रकार की आँच नहीं आने देती। वह सेवाभावी है। बछराज की बीमारी के समय वह उसकी बहुत सेवा करती है। उसे धोखा देनेवाले दीने तथा एक सिपाही की वह जान लेती है। अपने पति बछराज के सामने वह शर्मिंदा होकर माफी माँगती है। वह अपने किए पर पछताती है।

सिराम - बावरिया जाति का है। वह एक अच्छा शिकारी है। वह बातों-बातों में आवेश में आताहै, शुबो का वह नजदीक का साथी है। आज के आवेशमय युवा वर्ग का वह प्रतिनिधी है। हद्दी-गोदारी का पति तथा बाशिया का पिता है। वह डरपोक है। वह झगडो से कोसो दूर भागता है।

प्रस्तुत उपन्यास में थानेदार के माध्यम से भ्रष्ट पुलिस-अधिकारियों की की प्रवृत्तिपर प्रहार किया है।

इनके साथ-साथ गज्जी, चक्कल सपेरा, बाशिया, जमाल, गाडीवान, रूपचन्द खाती, बिहारबाला एम.पी.हीरानंद, जैतपालसिंघ, जमींदार, बाऊ, भाटी राजा, दीने, सिपाही आदि अन्य पात्रों का चयन किया हैं।

स्त्री पात्रों में गोदारी, जानकी काकी, फुलकी, बीनणी, आदि को लिया गया है।

निष्कर्ष

मणि मधुकरजी कृत "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास में लेखक ने लगभग चालीस मुख्य तथा गौण पात्रों का चयन किया है। इन पात्रों में से शुबो, इग्यारसीलाल, जुगनी और पुष्पाबाई प्रमुख पात्र हैं। इनके अलावा ठेकेदार बछराज, रावता, हरलो, बदरू मियाँ, सुवटी, अचली आदि गौण पात्र तथा अन्य पात्रों का समावेश किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों का चयन देश, काल-वातावरण की कसौटी पर किया है। लगभग सभी पात्र भारत-पाक सरहद्द पर स्थित राजस्थानी प्रदेश के दिखाई देते है। लेखक ने पात्रों की विशेषताओं के माध्यम से अपने उद्देश्य की पूर्ति करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक शुबो अकाल-पीड़ित सामान्य जनता का प्रतिनिधीत्व करता है। शुबो के व्यवहार में कुछ घटनाओं के कारण परिवर्तन आ जाता है। अत: शुबो परिवर्तनशील पात्र है। शुबो के इर्द-गिर्द पूरी कथा मँडराती है।

आलोच्य उपन्यास की नायिका जुगनी के माध्यम से समझदार, प्रेरणादायी, परिश्रमी एवं सामान्य भारतीय कृषक नारी का चित्रण लेखक ने बड़ी कुशलता के साथ किया है।

इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई तथा रावता प्रस्तुत उपन्यास के दुष्ट पात्र हैं। इनके माध्यम से समाज में फैला भ्रष्टाचार, आतंक, अन्याय-अत्याचार, अश्लीलता, गुंडागर्दी, दंगा-फसाद आदि प्रकार की गंदगी का चित्रण किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों की भरमार दिखाई देती है। पात्रों की भरमार होने पर उपन्यास को समझाना बड़ा कठिन कार्य होता है। किन्तु "पत्तों की बिरादरी" में पात्रों की भरमार होते हुए भी समझाने में कठिनाई महसूस नहीं होती। मणि मधुकरजी को पात्र तथा चरित्र-चित्रण में काफी सफलता मिली है। हर एक पात्र अपनी भूमिका निभाता है , अपने-अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। अत: हम कह सकते हैं कि मणि मधुकर कृत "पत्तों की बिरादरी" उपन्यास पात्र तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सफल बन गया है।

तृतीय अध्याय

" पत्तों की बिरादरी " में पात्र और चरित्र-चित्रण।"

१. डॉ शान्तिस्वरूप गुप्त-"पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दान्त"-पृ.३६६
२. वहीं पृ.३६८
३. मणि मधुकर "पत्तों की बिरादरी" पृ.१४
४. वहीं पृ.८१
५, वहीं पृ.६२
६. वहीं पृ.१४३
७. वहीं पृ.१६८
८. वहीं पृ.४२
९. वहीं पृ.१४३
१०. वहीं पृ.१४९
११. वहीं पृ.४६
१२. वहीं पृ.४६
१३. वहीं पृ.५३
१४. वहीं पृ.४८
१५. वहीं पृ.६२
१६. वहीं पृ.६४
१७. वहीं पृ.१६७
१८. वहीं पृ.१६८

१९.	मणि मधुकर "पत्तों की बिरादरी"	पृ. ३३
२०.	वहीं	पृ. ३०
२१.	वहीं	पृ. १५३
२२.	वहीं	पृ. ७६
२३.	वहीं	पृ. ५८
२४.	वहीं	पृ. ११८
२५.	वहीं	पृ. ७७
२६.	वहीं	पृ. ९५
२७.	वहीं	पृ. १६८
२८.	वहीं	पृ. ८०
२९.	वहीं	पृ. ७९, ८०
३०.	वहीं	पृ. १०३, १०४
३१.	वहीं	पृपृ. १६८
३२.	वहीं	पृ. ४७
३३.	वहीं	पृ. ३३
३४.	वहीं	पृ. १५६, १५७
३५.	वहीं	पृ. ३५
३६.	वहीं	पृ. ६१
३७.	वहीं	पृ. १२

३८.	मणि मधुकर -"पत्तों की बिरादरी"	पृ. ३१
३९.	वहीं	पृ. ६७
४०.	वहीं	पृ. ९०
४१.	वहीं	पृ. ९०
४२.	वहीं	पृ. ११६,११७
४३.	वहीं	पृ. १२३
४४.	वहीं	पृ. १२६
४५.	वहीं	पृ. ६०
४६.	वहीं	पृ. १५५
४७.	वहीं	पृ. २१
४८.	वहीं	पृ. १३६.